ISSN - 2321 : 2160
International Peer-Reviewed Referred Journal
(Formerly in the list of UGC Approved Journals No. 47772)

AYUDH

Volume-1

50th Issue
July 2019

Impact Factor : 3.1

EDITOR
MR. ROHIT PARMAR

Scanned with CamScanner

ISSN : 2321-2160

AYUDH

International Peer-Reviewed Refereed Journal

50th Issue Volume-1 July-2019

Editor in Chief:
Mr. Rohit Parmar

Advisory Board

- Prof. H. N. Vaghela (Former Acting V. C.)
  Professor & Head,
  Department of Hindi,
  M. K. Bhavnagar University, Bhavnagar,
  Gujarat, India
- Prof. (Dr.) Chetan Trivedi
  Vice Chancellor
  Bhakta Kavi Narsinh Mehta University,
  Junagadh, Gujarat, India
- Dr. R. P. Bhatt
  Principal,
  H & H. B. Kotak Science College, Rajkot,
  Gujarat, India
- Prof. Jaydipsinh K. Dodiya
  Professor & Head,
  Department of English & CLS,
  Saurashtra University, Rajkot, Gujarat
  India
- Dr. Martina R. Noronha
  Principal,
  Sir K. P. College of Commerce, Surat
  Gujarat, India

Editorial Board

- Dr. Jiten J. Parmar (GES-II)
  Assi. Professor,
  Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh,
  Gujarat, India
- Mr. Dilip B. Kataliya (GES-II)
  Assi. Professor,
  Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh,
  Gujarat, India
- Dr. Arjun G. Dave
  Founder & Owner
  Vedant Educational Services, Rajkot
  Gujarat, India
- Dr. Pravat Dangal
  Associate Professor,
  St. Joseph's College, Darjeeling,
  West Bengal, India
- Dr. Dnyaneshwar L. Sonawane
  Assi. Professor,
  Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya,
  Ambajogai, Dist. Beed, Maharashtra, India

Scanned with CamScanner

INDEX

1. આદિવાસી સ્ત્રીઓમાં શિક્ષણના પડકારો
ડૉ. ચેતન સી. પટેલ.....1
2. બી.એડ્. કક્ષાના તાલીમાર્થીઓ અનુકૂલનની તુલનાત્મક અભ્યાસ
વનિતા પી. સોલંકી.....5
3. વિદ્યાભારતી ગુજરાત પ્રદેશ સંલગ્ન પ્રાથમિક વિદ્યાલયમાં ચાલતા 'સમગ્ર વિકાસ' અભ્યાસક્રમ પ્રત્યેના વાલીઓના અભિપ્રાયો
ગિરીશ આર. વાળા.....8
4. वेदों में पर्यावरण एवं संरक्षण
विपुल जे. जादव.....11
5. કલ્પેશ પટેલનું જીવન–કવન
આરતી બી. પંચાલ.....15
6. THE RIME OF THE ANCIENT MARINER: A CRITICAL OVERVIEW
Aditya M. Vaishnav.....18
7. A study on Recommendation of Jalan Panel on Economic Capital Framework
DR. BHAVSINH M. DODIA & SHRI VINIT J. VARMA.....20
8. CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY
Bindu J. Trivedi.....25
9. ભારતીય વ્યાપારી બેંકોની બિનકાર્યશીલ અસ્કયામતોનો એક અભ્યાસ
ચનાભાઈ ભીખાભાઈ ટાલીયા.....27
10. Why Public Expenditure Matter for Elementary Education in India: Analysis Using State Level Data
Dhammdip Gaikwad.....30
11. કચ્છ જીલ્લામાં સિંચાઈક્ષેત્રે સરદાર સરોવર નર્મદા યોજનાની ભૂમિકા
હરેશકુમાર કે. હરીજન.....39
12. ENVIRONMENTAL ACCOUNTING AND REPORTING: A THEORETICAL ANALYSIS OF INDIAN SCENARIO
Isha Pathak & Dr. Ashvinkumar H. Solanki.....43
13. राईडर महोदयस्य शूद्रकविवेचनम्
डॉ. जय ओज़ा.....48
14. Green Accounting- Today' need of accounting
Kanisha V. Ayer.....50
15. 'CHOKHERBALI: A GRAIN OF SAND' ENTAILES THE LIVES OF MANY WOMEN OF THE TIME
Kinnaribahen Anilbhai Patel.....52
16. 'महासागर' उपन्यास में व्यक्त निकोबारी आदिवासियों की व्यथा कथा
मीना जी. बंजारा.....56
17. અનુસૂચિત જાતિના લોકોની સામાજિક – આર્થિક પરિસ્થિતિનો અભ્યાસ : સુરત જિલ્લાના સંદર્ભમાં
નીકિતા કથારિયા.....59
18. આઝાદીના લડવૈયા શ્રી કલ્યાણજીભાઈ વિઠ્ઠલભાઈ મહેતાનું જીવન અને રચનાત્મક પ્રવૃત્તિઓમાં તેમનું પ્રદાન
ડૉ.પીયૂષ સુરેશચંદ્ર અંજારીયા.....66

Scanned with CamScanner

वेदो में पर्यावरण एवं संरक्षण

विपुल जे. जादव
विद्यावारिधि शोधछात्र
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय

वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। तत्वदर्शी ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण-असन्तुलन की समस्या ही उत्पन्न नहीं हो सकती। पर्यावरण-सन्तुलन से तात्पर्य है जीवों के आसपास की समस्त जैविक एवं अजैविक परिस्थितियों के बीच पूर्ण सामंजस्य। इस सामंजस्य का महत्व वेदों में विस्तारपूर्वक वर्णित है।कल्याणकारी संकल्पना, शुद्ध आचरण, निर्मल वाणी एवं सुनिश्चित गति क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मूल विशेषताएँ मानी जाती हैं और पर्यावरण-सन्तुलन भी मुख्यतः इन्हीं गुणों पर समाश्रित है।

पर्यावरण का स्वच्छ एवं सन्तुलित होना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता को यह तथ्य बीसवीं शती के उत्तारार्ध्द में समझ में आया है, जबकि भारतीय मनीषा ने इसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था। हमारे ऋषि-मुनि जानते थे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष तथा वायु इन पंचतत्वों से ही मानव शरीर निर्मित है-

पंचस्वन्तु पुरुष आविवेशतान्यन्तः पुरुषे अर्पितानि।

उन्हें इस तथ्य का भान था कि यदि इन पंचतत्वों में से एक भी दूषित हो गया तो उसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है। इसलिए उन्होंने इसके सन्तुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक धार्मिक कृत्य करते समय लोगों से प्रकृति के समस्त अंगों को साम्यावस्था में बनाए रखने की शपथ दिलाने का प्रावधान किया था, जो आज भी प्रचलित है-

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रौषधयः शान्ति।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्मं शान्तिः सर्वशान्तिदेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥

अतः स्पष्ट है कि यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करते हुए मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन में अनुस्यूत एकता का दर्शन बहुत पहले कर चुका था। ऋग्वेद का नदी सूक्त एवं पृथिवी सूक्त तथा अथर्ववेद का अरण्यानी सूक्त क्रमशः नदियों, पृथिवी एवं वनस्पतियों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देते हैं। भारतीय दृष्टि चिरकाल से सम्पूर्ण प्राणियों एवं वनस्पतियों के कल्याण की आकांक्षा रखती आई है। 'यद्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' सूक्ति भी पुरुष तथा प्रकृति के मध्यअन्योन्याश्रय सम्बन्ध की विज्ञानपुष्ट अवधारणा को बताती है।स्वच्छ जल एवं स्वच्छ परिवेश किसी भी सामाजिक वातावरण के पल्लवन एवं विकसन की अपरिहार्य आवश्यकता है। जीव-जन्तुओं हेतु अनुकूल परिस्थितियों में ही जीव-जन्तुओं का समाज पुष्पित-पल्लवित होता है। अतः सामाजिक विकास में पर्यावरण तथा जल संरक्षण की अनिवार्यता को विस्मृत नहीं किया जा सकता। यजुर्वैदिक ऋषि **शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शन्योरभिस्त्रवन्तु नः ॥** कहकर शुद्ध जल के प्रवाहित होने की कामना करता है।

मानव ने जब धरती पर पहली बार अपना पांव रखा था । तब प्रकृति अपने सम्पूर्ण वैभव तथा कलात्मक सौन्दर्य के साथ उस का स्वागत करने के लिए उपस्थित थी। मानव संस्कृति का विकास प्रकृति के सुरम्य आंचल में हुआ है। प्रकृति प्रदत अन्न, मूल, कन्द, फल आदि ने यदि उस की बुभुक्षा को शान्त किया तो नदी-निर्झरों से प्राप्त शीतल जल ने उस की प्यास को बुझाया।। उधर सुगन्धियुक्त पुष्पों के संस्पर्श से सुवासित वायु ने उस के प्राणों में नई ऊष्मा का सञ्चार किया और प्रकृति ने ही उसे अपने जीवन को सत्य, शिव और सुन्दर के निकट लाकर व्यतीत करने की प्रेरणा दी। वेदों का स्वाध्याय करने वाले और उन की जीवनोपयोगी शिक्षाओं का प्रवचन करने वाले ऋषियों के आश्रम नदियों के किनारों, जलाशयों के तटों, गहन अरण्यों तथा पर्वतीय उपत्यकाओं में प्रायः होते थे। अतः प्रकृति का

Scanned with CamScanner

प्रेरणादायक सान्निध्य उन्हें सदा प्राप्त रहता था। ऐसी स्थिति में यदि वेद प्राकृतिक पर्यावरण के बारे में मौन रह जाते तो यह एक आश्चर्य ही होता।

काल में भी पर्यावरण के प्रदूषित होने की समस्या उपस्थित हुई थी तथा समुद्र मन्थन और कुछ नहीं, अपितु देवताओं एवं असुरों द्वारा प्रकृति का निर्दयतापूर्वक दोहन था, जिससे अमृत के साथ-साथ हलाहल के रूप में प्रदूषण भी निकला होगा। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि यह जहरीली फास्जीन गैस थी। 16 उस समय भगवान शिव ने प्रदूषण रूपी हलाहल का पान कर सृष्टि को प्रदूषण मुक्त किया था। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः भगवान शिव ने प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों को नष्ट कर धरती को प्रदूषण से रहित किया होगा।

बृहदारण्यकोपनिषद में जल को सृजन का हेतु स्वीकार किया गया है और कहा गया है कि पंचभूतों का रस पृथ्वी है, पृथ्वी का रस जल है, जल का रस औषधियाँ हैं, औषधियों का रस पुष्प है, पुष्पों का रस फल है, फल का रस पुरुष है तथा पुरुष का रस वीर्य है, जो सृजन का हेतु है।16 मत्स्य पुराण में पादप का अर्थ पैरों से जल पीने वाला बताया गया है।17 इस तथ्य से भी वनस्पतियों एवं जल के वैज्ञानिक सम्बन्धों की पुष्टि की गई है।

बृहदारण्यकोपनिषद (अध्याय 2, ब्राह्मण 5) में याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को समझाया, "इयं पृथ्वी सर्वेषां भूतानां मध्वस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु - यह पृथ्वी सभी भूतों (मूल तत्वों) का मधु है और सब भूत इस पृथ्वी के मधु।" (वही, 1) इसी प्रकार "यह अग्नि समस्त भूतों का मधु है और समस्त भूत इस अग्नि के मधु हैं।" (वही 2) "यह वायु समस्त भूतों का मधु है और समस्त भूत वायु के मधु हैं।" (वही, 3) फिर आदित्य और दिशा चन्द्र, विद्युत मेघ और आकाश को भी इसी प्रकार "मधु" बताते हैं। (वही, 4-10) फिर कहते हैं "यह धर्म और सत्य समस्त भूतों का मधु है और समस्त भूत इस सत्य व धर्म के मधु हैं।" (वही, 11-12) यहां धर्म का अर्थ समूची सृष्टि प्रकृति को परिवार जानना और बरतना ही है। प्रकृति चाहती है सब जिएं, सबको जीने दें, सब सुखी हों, सब आनंद मगन रहें। मधुमय हो सबका जीवन। प्रगाढ़ संवेदना की तरंग में इसी अनुभूति से जन्म लेती है - मधुप्रीति और मधुप्रीति से युक्त कोई भी व्यक्ति पर्यावरण का नाश नहीं कर सकता।

आकाश, वनस्पति, मेघ, वर्षा आदि प्राकृतिक तत्वों की रक्षा तथा यजुर्वेद में ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं जिनमें जल, वायु, मानव जीवन के उन्नयन में उन के योगदान की चर्चा की गई है। ज्यों-ज्यों मानव जीवन में जटिलता बढ़ी, उस के रहन-सहन, खान-पान, आहार-विहार में कृत्रिमता आई वह प्रकृति का वात्सल्यमयी गोद से दूर हटता गया, फलतः उस की कठिनाइयों में वृद्धि हुई और उस के शरीर, मन और आत्मा में रुग्णता की।वृद्धि हुई। आज सर्वत्र पर्यावरण की शुद्धता का कारण हो रहा है।स्वच्छ वायु में सांस लेना दुर्लभ हो रहा है तथा महानगरीकी रातदिन की हाय-हाय तथा दानवाकार वाहनों के आने-जाने से उत्पन्नकर्णकटु-ध्वनियों ने जीवन को दूभर बना दिया है। न पीने केलिए स्वच्छ जल है और न सांस लेने के लिए विषाणु मुक्तहवा। कृत्रिम रसायनों से असमय में पकाई गई फसलों तथा शाकफलादि के सेवन ने हमारे शरीर को रोगों का घर बना दिया है।ऐसे विषम वातावरण में वेदों के पर्यावरण विषयक विचारों कोजानना समीचीन तथा प्रासंगिक है। देखें, यजुर्वेद इस विषय में क्याकहता है?

- **जल**

जल को जीवन कहा गया है। जीवन के प्रवाह को गति देनेमें वायु के समान ही जल का महत्व है। यजुर्वेद में तीन मन्त्रोंकल्याणकारी होने की घोषणा करती है। 11वें अध्याय के ये तीनकी एकशृंखला जल के ऊर्जादायी होने तथा जीवन के लिएबताते हैं। रस रूप में जल शिवतम (अत्यन्त कल्याणकारी) है।मन्त्र'(50, 51, 52) जल को अत्यन्त मंगलकारी तथा शक्तिदातावेदों में स्वस्ति-कामना के जो मन्त्र हैं उन का मुख्य अभिप्रायप्रकृति के कण-कण में सौम्यता तथा पावनता लाकर उन संविद्यमान अनिष्टकारी तत्वों का उन्मूलन करने में है। 22वें अध्यायका 26वां मन्त्र वात (वायु), धूम, सामान्य मेघ, विद्युत, गर्जनाकरते बादल तथा प्रलयकारी वर्षा वाले बादलों में स्वस्ति कीकामना करता है। बादलों का यथासमय वर्षण ही मानव के हितमें है अतः **'निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु'** के द्वारा सन्देशदियागया कि बादलों से वृष्टियथासमय होहीताकिअतिवृष्टिसे बचा जा सके ।

- **वायु**

स्वच्छ वायु का सेवन ही प्राणियों के लिए हितकर है यह बात वेद के निम्न मन्त्रों से प्रकट होते हैं-

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे।
प्रण आयूंषि तारिषत्।। -ऋ० १०/१८६/१

Scanned with CamScanner

वायु हमें ऐसा औषध प्रदान करे, जो हमारे हृदय के लिए शांतिकर एवं आरोग्यकर हो, वायु हमारे आयु के दिनों को बढ़ाए।

यद्धो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः।
ततो नो देहि जीवसे।। -ऋ० १०/१८६/3

हे वायु! जो तेरे घर में अमृत की निधि रखी हुई है, उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान कर, जिससे हम दीर्घजीवी हों। यह वायु के अन्दर विद्यमान अमृत की निधि ओक्सीजन या प्राणवायु है, जो हमें प्राण देती है तथा शारीरिक मलों को विनष्ट करती है। उक्त मन्त्रों से यह भी सूचित होता है कि प्रदूषित वायु में श्वास लेने से मनुष्य अल्पजीवी तथा स्वच्छ वायु में कार्बन- आदि ओषिधकी मात्रा कम तथा ओक्सीजन की मात्रा अधिक होती है। उसमें श्वास लेने से हमें लाभ कैसे पहुंचता है, इसका वर्णन वेद के निम्नलिखित मन्त्रों में किया गया है-

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।।
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे।। -ऋ० १०/१३७/२,३

ये श्वास-निःश्वास रूप दो वायुएँ चलती हैं, एक बाहर से फेफड़ों के रक्त-समुद्र तक और दूसरी फेफड़ों से बाहर के वायुमंडल तक। इनमें से पहली, हे मनुष्य तुझे बल प्राप्त कराए और दूसरी रक्त में जो दोष है उसे अपने साथ बाहर ले जाये। हे शुद्ध वायु, तू अपने साथ औषध को ला। हे वायु, शरीर में जो मल है उसे तू बाहर निकाल। तू सब रोगों की दवा है, तू देवों का दूत होकर विचरता है।

- **भूमि**

भूमि को वेद में माता कहा गया है **"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः ।"** -अथर्व० १२/१/१२ **"उपहूता पृथिवी माता ।"** -यजु० २/१०। वेद कहता है-

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा।। -अथर्व० १२/१/९

जिस भूमि की सेवा करनेवाली नदियां दिन-रात समान रूप से बिना प्रमाद के बहती रहती हैं वह भूरिधारा भूमिरुप गौ माता हमें अपना जलधार-रूप दूध सदा देती रहें।

वेद मनुष्य को प्रेरित करते हुए कहता है **"पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह, पृथिवीं मा हिंसीः।"**अर्थात् तू उत्कृष्ट खाद आदि के द्वारा भूमि को पोषक तत्व प्रदान कर, भूमि को दृढ़ कर, भूमि की हिंसा मत कर"। भूमि की हिंसा करने का अभिप्राय है उसके पोषक तत्वों को लगातार फसलों द्वारा इतना अधिक खींच लेना कि फिर वह उपजाऊ न रहे। भूमि पोषकतत्वविहीन न हो जाये एतदर्थ एक ही भूमि में बार-बार एक ही फसल को न लगाकर विभिन्न फसलों को अदल-बदलकर लगाना, उचित विधि से पुष्टिकर खाद देना आदि उपाय हैं। आजकल कई रासायनिक खाद ऐसे चल पड़े हैं, जो भूमि की उपजाऊ-शक्ति को चूस लेते हैं या भूमि की मिट्टी को दूषित कर देते हैं।

- **सूर्य**

वेद में कहा है **"सा घा नो देवः सविता साविषदमृतानि भूरि"** अर्थात् सूर्य अमृत बरसाता है -अथर्व० ६/१/३", **"सूर्य यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः"**अर्थात् हे सूर्य, जो तेरा ताप है उससे तू उसे तपा डाल जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं -अथर्व० २/२१/१"।

येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना।
तेनास्मद् विश्वामनिरामनाहुतिमपामीवामप दुष्वप्न्यं सुव।। -ऋ० १०/३७/४

सूर्य अपनी ज्योति से अन्धकार को बांधता है, समस्त अन्नाभाव को, अन्नाहुति को, रोग को और दुःस्वप्न को दूर करता है।

- **ऋतु चक्र**

पर्यावरण के निर्माण में ऋतुओं की भूमिका प्रत्यक्ष है। विभिन्नऋतुओं का उल्लेख 21 वें अध्याय के मंत्रों में विस्तार से मिलताहै। वसन्त (21/23), ग्रीष्म (21/24), वर्षा (21/25), शरद् (21/26), हेमन्त (21/26) तथा शिशिर (21/28)

Scanned with CamScanner

के क्रम से ऋतुओं का गमनागमन मनुष्यों को संतुलित जीवन बिताने कीशिक्षा देता है। प्रत्येक ऋतु में गाए जाने वाले आहारादि कारोबन स्वास्थ्य को उत्तम बनाता है। ऋतु अनुकूल आचरण वेदोंकी शिक्षा में अन्यत्र है। वेद मंत्रों के द्रष्टा ऋषियों ने निखिल ब्रह्माण्ड में पाये जाने।वाले प्रकृति के तत्वों के योगक्षेम की कामना की थी। सभीलोकों में शांति रहे, भौतिक पदार्थों में सामंजस्य और संतुलन बना रहे तथा प्राकृतिक पदार्थों में पाई जाने वाली यह शान्तिमानव के लिए भी शान्ति का सन्देश लाये। इस वैदिक कामनाको यजुर्वेद के निम्न मन्त्र में दर्शाया गया है

"द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषध
यः शान्ति र वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति ब्रहम शान्तिः सर्व
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।"36/17

सम्पूर्ण सृष्टि-रचना में पर्यावरण का संतुलन तभी बना रहसकता है जब द्युलोक, पृथ्वीलोक, अंतरिक्ष, जल, औषधियां, वनस्पति, आदि मनुष्य के लिए शांति दायिनी हों। सम्पूर्ण काव्य शक्तियाँ तथा सर्व सृष्टि के विजेता परमात्मा द्वारा हम पर शान्तिकी वर्षा हो। निश्चय ही शान्ति भी शान्ति दायिनी रहे। इस प्रकारपर्यावरण की स्वच्छता तथा उस का संचालन वेद की प्रमुखशिक्षा है।अंत में उपसंहार-रूप में हम कह सकते हैं कि वायु, जल, भूमि, आकाश, अन्न आदि पर्यावरण के सभी पदार्थों की शुद्धि के लिए वेद भगवन् हमें जागरूक करते हैं तथा आई हुई अस्वच्छता को दूर करने का आदेश देते हैं। पर्यावरण की शुद्धि के लिए वेद भगवन् वनस्पति उगाना, अग्निहोत्र करना, विद्युत, अग्नि, सूर्य एवं ओषधियों का उपयोग करना आदि उपायों को सुझाते हैं।

विपुल जे. जादव
विद्यावारिधि शोधछात्र
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner